110 वें विश्व प्रवासी और शरणार्थी दिवस पर

महामहिम पोप फ्रांसिस का संदेश

रविवार 29 सितंबर 2024

ईश्वर अपनी प्रजा के साथ चलते हैं।

प्रिय भाइयों और बहनों!

धर्माध्यक्षों की धर्मसभा की सोलहवीं सामान्य आम बैठक के प्रथम सत्र का समापन पिछले वर्ष 29 अक्टूबर को हुआ था। इस सत्र ने कलीसिया की मौलिक बुलाहट के एक भाग के रूप में धर्मसभा के प्रति हमारी समझ को और गहरा किया है। ''ईश्वर की प्रजा और स्वर्गराज्य के आने की सेवकाई और कृपा के बीच में धर्मसभा को मुख्य रूप से एक फलदायी संवाद की संयुक्त यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।''(synthesis Report, Introduction)

धर्मसभा के विभिन्न आयाम कलीसिया को अपने भ्रमण संबंधी स्वभाव की पुर्नखोज करने पर दबाव डालते हैं, जब इतिहास में ईश्वर की प्रजा, जिसे हम, स्वर्ग राज्य की ओर 'प्रवास' करते देखते हैं। (cf.Lumen Gentium 49) इसमें निर्गमन ग्रंथ में दी बाइबिल कथाएँ स्वाभाविक तौर पर सामने आ जाती हैं, जो बतलाती हैं कि इस्राएली वर्षों की दास्ता से मुक्ति के बाद प्रतिज्ञात देश की लंबी यात्रा पर थे। यह कलीसिया की अपने ईश्वर से भेंट की यात्रा का आदि रूप था।

संभव है कि हम अपने समय में प्रवासियों को भी उस समय की प्रभु की प्रजा की सजीव प्रतिकृति के रूप में देखें जो अनंत आवास की यात्रा पर हैं। उम्मीद की यह यात्रा हमें याद दिलाती है कि ''हमारा स्वदेश तो स्वर्ग है और हम स्वर्ग से आने वाले मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीह की राह देखते रहते हैं।''(फिलिप्पियों के नाम संत पौलुस का पत्र 3:20)

बाइबिल में दी गई निर्गमन व आज के प्रवासियों की छवि में कई समानताएँ हैं। मूसा काल के इस्राएलियों की तरह ही आज के प्रवासी भी अक्सर शोषण, दुर्व्यवहार,असुरक्षा, भेदभाव और विकास के अवसरों की कमी के कारण पलायन करते देखे गए हैं। रेगिस्तान के यहूदियों की तरह ये प्रवासी भी भूख–प्यास,बीमारी व कठिन परिश्रम से थकावट तथा निराशा जैसी कई कठिनाइयाँ झेलते हैं।

फिर भी निर्गमन व हर प्रवास की मूल सच्चाई यह है कि हर समय, हर जगह ईश्वर अपनी प्रजा के साथ रहते और उनके आगे चलते हैं। ईश्वर का अपनी प्रजा के बीच होना ही मुक्ति के इतिहास की निश्चितता है।''तुम्हारा प्रभु ईश्वर तुम्हारे साथ चलता है। वह तुम्हें विनाश नहीं करेगा और तुमको नहीं छोड़ेगा।''(विधि विवरण ग्रंथ 31:6)जो लोग मिस्र से बाहर आए थे उन पर यह प्रकटीकरण अलग–अलग रूपों में था,''दिन में बादल के खंभे और रात में प्रकाश देने के लिए अग्नि स्तंभ के रूप में''(निर्गमन 13:21) विधान की पाटियों की रक्षा करने वाला तंबू शिविर के बाहर कुछ ही दूरी पर था,ताकि ईश्वर उनके नज़दीक रहें।(निर्गमन 33:7)काँसे के साँप का स्तंभ ईश्वरीय सुरक्षा का कवच था।(गणना 21:8,9) मन्ना और पानी (निर्गमन 16–17) भूखे–प्यासे लोगों के लिए ईश्वर के दान थे। ईश्वर को तंबू में अपना आवास सबसे प्रिय था। दाऊद के शासन के समय भी ईश्वर ने मंदिर के बजाय तंबू में रहना स्वीकारा था ताकि वे अपने लोगों के साथ चल सकें।'' मैं एक तंबू से दूसरे तंबू और एक निवास से दूसरे निवास जाता रहा। (पहला इतिहास ग्रंथ 17:5)

कई प्रवासियों ने ईश्वर को अपनी मुक्ति यात्रा में अपना साथी,पथप्रदर्शक व सहारा अनुभव किया है। वे यात्रा से पहले खुद को उन्हें सौंप देते और आवश्यकता में उन्हीं की ओर मुड़ते। निराशा के क्षणों में वे उन्हीं में सांत्वना पाते। शुक्र है कि रास्ते में भले समारी जैसे लोग मिल जाते। अपनी प्रार्थना में वे गुप्त रूप से अपनी आशाएँ उनके सामने रखते। प्रवासी रेगिस्तानों,

नदियों, समुद्रों और हर महाद्वीप की यात्रा में अपने साथ बाइबिल की कितनी प्रतियाँ, प्रार्थना की पुस्तकें व रोज़री माला रखते।

ईश्वर न सिर्फ अपनी प्रजा के साथ बल्कि उनमें भी चलते हैं, वे अपने आप को कमज़ोर,गरीब और अधिकारहीन उन स्त्री–पुरूषों में देखते हैं, जो सदियों से यात्रा कर रहे हैं। इस रूप में हम उनके अवतरण के रहस्य का विस्तारित रूप देखते हैं।

इस प्रकार हर ज़रूरतमंद प्रवासी भाई–बहन के साथ भेंट ''ईश्वर के साथ भेंट ही है।''ऐसा उन्होंने कहा भी है। ये वे ही हैं जो हमारा द्वार खटखटा रहे हैं, भूखे,प्यासे,परदेसी,नंगे,बीमार और कैदी के रूप में हमारी मदद चाहते हैं। (उपदेश,'भय से मुक्ति' के सहभागियों के साथ हुआ मिस्सा–बलिदान, sacrofano, 15 फरवरी 2019)मत्ती अध्याय 25 में अंतिम न्याय के संबंध में कोई संदेह नहीं छोड़ता है।(अनुच्छेद 35) और फिर''मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे–से–छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया,वह मेरे ही साथ किया।''(अनुच्छेद 40) इस यात्रा में हर भेंट हमारे लिए प्रभु से मिलने का एक अवसर है, यह एक मुक्तिदायी अवसर है,क्योंकि ईश्वर हर उस भाई या बहन में मौजूद हैं जो हमारी मदद चाहते हैं। इस रूप में वास्तव में ये निर्धन हमें बचाते हैं क्योंकि वे हमें प्रभु से मिलने में समर्थ बनाते हैं। (तीसरे विश्व निर्धन दिवस का संदेश,17 नवंबा 2019)

प्रिय भाइयों और बहनों, यह दिन जो प्रवासियों और शरणार्थी भाई–बहनों को समर्पित है, आइए हम एकजुट होकर प्रार्थना करें कि जो लोग गरिमापूर्ण जीवन जीने के अवसरों की खोज में अपनी भूमि छोड़ते हैं, हम उनके साथ एक धर्मसभा के रूप में यात्रा करें। हम यात्रा कर रही प्रभु की विश्वासी प्रजा को व आने वाली धर्मसभा बैठक को 'धन्य कुँवारी की मध्यस्थता को सौंप दें, जो निश्चित आशा व सांत्वना' का चिन्ह है।(XVI ordinary General Assembly Synthesis Report:Proceeding Along the Journey)

हे सर्वशक्तिमान पिता,

हम आपकी यात्री कलीसिया हैं
हम स्वर्ग राज्य की यात्रा पर हैं
हम अपनी मातृभूमि पर रहते हैं
पर लगता है मानो हम परदेसी हैं
हर परदेस हमारा घर है,
फिर भी हर मातृभूमि परदेस है,
भले हम पृथ्वी पर रहते हैं,
पर हम तो स्वर्ग के सच्चे नागरिक हैं
आपने अल्पकाल के लिए हमें धरती पर घर दिया है
दुनिया के उस छोटे टुकड़े पर
हम अपना अधिकार न समझ बैठें,
सहायता करें कि हम अपने प्रवासी भाई–बहनों के साथ
उस अनंत आवास की ओर चलते रहें
जिसे आपने हमारे लिए तैयार कर रखा है,
हमारी आँखों और हृदयों को खोल दें
ताकि जब–जब हमारी ज़रूरतमंदों से भेंट हो
तब–तब वह भेंट आपके पुत्र और हमारे स्वामी येसु से भेंट हो।

(Rome,Saint John Lateran,24 May 2024,Memorial of the Blessed Virgin Mary,Help of Christian)

FRANCIS